C.W

paper III

History of Medival India

Date - 14.02.2022

Dr Deepak Kumar Rajak
Guest professor
S.R.A.P. College, Muz

Date - 14.02.2022

सल्तनतकालीन अर्थव्यवस्था

सल्तनत काल की अर्थव्यवस्था के विषय में हमें उतने विस्तार में सूचना नहीं मिलती जितनी हमें मुगल काल की अर्थव्यवस्था के विषय में सूचना प्राप्त होती है इसका कारण है कि अबुल फजल की आईन - ए - अकबरी जैसे एक विस्तृत ग्रंथ की अनुपस्थिति। इसके, सल्तनत काल की अर्थव्यवस्था के प्रभाव तथा उसका मूल्यांकन इतिहास लेखन की दृष्टि से भी एक विवादास्पद मुद्दा रहा है। इस संबंधी में एक दृष्टिकोण (के० एस० लाल और लखनजी जोशी) यह मानता है कि दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने एक विनाशकारी प्रभाव उत्पन्न किया तथा इसने अर्थव्यवस्था को भी गहरा धक्का पहुँचाया। दूसरी मुहम्मद हबीब जैसे विद्वान ने दिल्ली सल्तनत की स्थापना को नगरीय क्रांति की संज्ञा दी है। उपर्युक्त दोनों विचार अपने स्वरूप में अतिवादी है। इस संबंध में मान्य मत है कि तृतीय नगरीकरण की प्रक्रिया 10वीं सदी तथा उससे पहले ही आरंभ हो गयी थी। दिल्ली सल्तनत की स्थापना ने वाणिज्य व्यापार के विकास एवं नगरीकरण की प्रक्रिया को और भी गति प्रदान की।

सल्तनत काल में कृषि उत्पादन बेहतर स्थिति में था। यही वजह है कि नगरीय जनसंख्या के अनाजों की आवश्यकता पूरी हुई। कृषक भूमि बहुलता में उपलब्ध थी केवल उन्हें आबाद करने कि जरूरत थी।

Ancient India

Dr. Deepak Kumar Ranjak
Guest professor
S.R.A.P College, Chakiya

गुप्त शक्ति के उत्थान तथा विकास में वैवाहिक संबंधों की भूमिका :-

उत्तर: गुप्त शक्ति की प्रगति में वैवाहिक संबंधों की वही भूमिका रही जो आरंभिक मगध शासकों की सफलता तथा 16वीं एवं 17वीं सदी में यूरोपीय शासकों की सफलता में रही थी।

गुप्त शक्ति के संस्थापक चन्द्रगुप्त I ने अपनी सैन्य एवं कूटनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमार देवी के साथ विवाह किया। चूंकि इस समय उत्तर भारत में लिच्छवि राज्य एक महत्वपूर्ण राज्य था अतः इस संबंध का लाभ निश्चय ही गुप्तों को प्राप्त हुआ। गुप्त इस सम्बन्धों को कितना महत्व देते थे इस बात का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि समुद्रगुप्त ने 'लिच्छवि - दौहित्र' की उपाधि धारण की। फिर समुद्रगुप्त की साम्राज्यवादी संरचना में भी वैवाहिक संबंधों का विशेष महत्व था, जैसा कि हमें समुद्रगुप्त की 'प्रयाग प्रशस्ति' से ज्ञात होता है कि पराजित शासकों एवं सामंतों के समक्ष तीन शर्तों में एक शर्त 'कन्योपायन' (पुत्री अर्पित करना) को रखा गया। वस्तुतः इस काल के सामंती वातावरण में वैवाहिक संबंध ही अधीनस्थ शासकों एवं सामंतों की वफादारी सुनिश्चित करने का सबल माध्यम था। कुछ परिवर्तनों के साथ आगे अकबर ने भी इस नीति को अपनाया।

समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपने पिता की सैनिक विजय की नीति को अपने पितामह के सामरिक गठबंधन की नीति के साथ भी जोड़ दिया। उसने एक नाग वंश की राजकुमारी से विवाह किया। आगे उसने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह एक वाकाटक शासक रुद्रसेन द्वितीय से करवाया। इस विवाह से बहुत बड़ा लाभ उसे प्राप्त हुआ। वाकाटक शक्ति के सहयोग से वह पश्चिम भारत में शकों के विरुद्ध सफलता पायी और गुप्तों का गुजरात क्षेत्र पर कब्जा हो गया।